dkfrd mjko ¼1961&1981½ dh lkekftd ,oa jktuhfrd fojklr dk ,sfrgkfld ewY;kadu

ih,p-&Mh- mikf/k gsrq izLrkfor 'kks/k izc/k dh :ijs[kk

bfrgkl foHkkx ¼lkekftd foKku ladk;½
jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

'kks/k funsZ'kdk %

MkW0 ve`rk nÙkk

विभागाध्यक्ष

इतिहास विभाग

योगदा सत्संग महाविद्यालय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

kekftd ,oa jktuhfrc

'kks/kkFkhZ %

'kf'k vkuan

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

झारखण्ड की धरती ने महान सपूतों को जन्म दिया है जिन्होंने अपनी विद्वता कर्तव्यनिष्ठता एवं कार्यकुशलता से जनजातीय समाज के उन्नयन हेतु प्रयास किये किये है। इन्हीं में से एक ^i[kjkt lkgc* एवं ^dkyk ghjk* के उपनाम से प्रसिद्ध कार्तिक उराँव हैं जिन्होंने अपनी नेतृत्व क्षमता, कर्मठता एवं दूरदृष्टता से तात्कालीन आदिवासियों के विकास के मार्ग को प्रदर्शित करने के साथ–साथ संस्कृति, एवं विरासत को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने का कार्य किया।

कार्तिक उराँव का जन्म 29 अक्टूबर, 1924 को तात्कालीन बिहार राज्य के राँची (वर्त्तमान में झारखण्ड राज्य के गुमला जिला) जिले के करौंदा लिटाटोली नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम जवरा उराँव एवं माता का नाम बिरसी उराँव था। इनका विवाह 4 जून, 1950 को सुमती उराँव से हुआ था।

कार्तिक उराँव ने अपनी उच्च विद्यालय की शिक्षा गुमला उच्च विद्यालय, गुमला से पूरी की। इसके बाद साइन्स कॉलेज एण्ड बिहार कॉलेज ऑफ इन्जीनियरिंग, पटना से बीटेक की डिग्री प्राप्त की एवं आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए जहाँ इन्होंने एम0एस0सी0 इन्जीनियरिंग सहित कई उपाधियाँ प्राप्त की।

कार्तिक उराँव ने अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में देश और जनजातीय समाज के प्रति जागरूक रहकर कई महत्वपूर्ण कार्य किये। भारत में इन्होंने एच0 ई0 सी0 में सीनियर डिजाइन इंजीनियर एवं डिप्टी चीफ इन्जीनियर जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। इन्होंने अपने तकनीकी शिक्षा एवं विद्वता के बल पर पहले हिन्कले प्वाइन्ट न्यूक्लियर पावर स्टेशन का डिजाइन तैयार किया और भारत आने के बाद एच0सी0एल0, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, सेन्ट्रल लाइब्रेरी (राँची विश्वविद्यालय), राजेन्द्र मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल एवं फिरायालाल बाजार भवन का डिजाइन तैयार किया।

कार्तिक उराँव ने भारत में विभिन्न सरकारी पदों पर कार्य करते हुए छोटानागपुर के जनजातीय समाज को सूक्ष्मता से देखा। उन्होंने महसूस किया कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी जनजातीय समाज आम जीवन शैली में शामिल नहीं हो पाया है और उनको प्रदत्त अधिकार एवं योजनाओं का लाभ पूरी तरह से उन तक नहीं पहुँच पाता है।

कार्तिक उराँव ने पूरे देश में यात्रा करके जनजातीयों के समस्याओं का आंकलन किया एव उनके हितों की रक्षा के लिए पूरे मनोयोग से प्रयास किये। इन्हीं प्रयासों में से एक प्रयास भूदान आन्दोलन का

विरोध करना था। भूदान आन्दोलन में आदिवासियों के जमीन को कौड़ी के भाव में खरीदा गया जिससे सीमांत पर रहने वाले जनजातीय समाज की स्थिति में और गिरावट आई। इन्होंने अपने प्रयास से भूदान आन्दोलन को छोटानागपुर एवं अन्य जनजातीय क्षेत्रों में लागू करने पर रोक लगवाया। इनका मानना था कि ^^,d vkfnoklh d: thou dk vfLrRo dk vk/kkj mldh tehu gSA tehu ugha jgsxh rks vkfnoklh Hkh ugha cpsxkA** इस सफल प्रयास के बाद वे जनजातियों के मसीहा के रूप में पहचाने जाने लगे।

कार्तिक उराँव का एक अन्य कार्य जनजातीय संवैधानिक आरक्षण की अवधि को बढ़वाना था। उनके प्रयासो से जनजातियों को संविधान प्रदत्त आरक्षण के अधिकारों को अगले 10 वर्षो के लिए बढ़ाया गया और जनजातीय समाज के आरक्षण प्रदत्त अधिकारों की रक्षा की गई।

कार्तिक उराँव ने राजनीतिक जीवन की शुरूआत कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में की। इन्होंने कांग्रेस पार्टी के चुनाव चिन्ह पर तीसरे लोकसभा का चुनाव लोहरदगा निर्वाचन क्षेत्र से लड़ा परन्तु स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार डेविड मुंजे से चुनाव हार गये। इसके बाद वर्ष 1967, वर्ष 1971 एवं वर्ष 1980 के लोकसभा चुनाव में लोहरदगा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए।

लोक सभा सदस्य रहते हुए कार्तिक उराँव प्राक्कलन कमिटी (1968–70), ज्वाइन्ट कमेटी ऑन शिड्यूल कास्ट एण्ड शिड्यूल ट्राइब ऑडर (एमेन्डमेन्ट) बिल (1967–1969), हेन्डी क्रॉफ्ट बोर्ड (1968–69), प्राइम मिनिस्टरस् कमिटी ऑन प्लानिंग (1968–70), जोनल रेलवे यूजरस् कन्सलटेटिव कमिटी, साउथ–ईस्टर्न रेलवे (1967–72) आदि सरकारी समितियों में सक्रिय सदस्य रहे।

कार्तिक उराँव अपने राजनीतिक जीवन में एक बार बिहार विधान सभा में बिशुनपुर विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 1977 में निर्वाचित हुए। सक्रिय राजनीति में रहते हुए अलग झारखण्ड राज्य के माँग का कार्तिक उराँव ने भी समर्थन किया। इस दौरान ये छोटानागपुर–संताल परगना स्वाशासी विकास प्राधिकार के उपाध्यक्ष चुने गये।

वर्ष 1980 में इन्होंने भारत सरकार में नागरिक उड्डयन एवं विमानन मंत्रालय के स्वतंत्र राज्यमंत्री के पद पर शपथ ली एवं बाद में संचार राज्यमंत्री के पद पर आसीन रहे।

कार्तिक उराँव अपने धर्म एवं संस्कृति के प्रति बहुत जागरूक थे एवं युवाओं को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया करते थे। इन्होंने जनजातीय संस्कृति, नृत्य और संगीत को संरक्षित एवं संर्वधित करने के लिए युवाओं का सदैव मनोबल बढ़ाया। इन्होंने जनजातीय संस्कृति एवं जनजातीय समाज की प्राचीन न्यायिक–सामाजिक स्वशासन व्यवस्था, ''पड़हा'' का पुनर्गठन किया। उनका प्रयास था कि लोग अपने इतिहास को जाने, अपनी विरासत को समझे एवं उसपर गर्व करें। सरहुल की झाँकी को निकालने की शुरूआत इन्हीं के प्रयासों के संभव हुआ। आज यह सरहुल की झाँकी प्रत्येक वर्ष बड़े भव्य रूप से निकाली जाती है जो अपनी संस्कृति की प्राचीन वैभव एवं विराटता को प्रदर्शित करती हैं।

कार्तिक उराँव ने जनजातीय समुदाय में धर्मान्तरण को रोकने एवं जनजातीय समाज के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए 'डिलिस्टिंग योजना'' का समर्थन किया। ''डिलिस्टिंग'' के तहत वैसे जनजातीय लोगों को जनजातीय समुदाय से डिलिस्ट करने की बात की गई जिन्होंने जनजातीय धर्म एवं संस्कृति को छोड़कर अपना धर्म परिवर्तन करके अन्य धर्म को स्वीकार कर लिया। इसके लिए उन्होंने सांसदों के समर्थन से एक बिल संसद के पटल पर पेश किया, जो आज भी लंबित है। कार्तिक उराँव शिक्षा के बहुत बड़े हिमायती थे। उनके अनुसार ^vf'k{kk gekjh ixfr e ck/kd cudj [kMk gA vfodflr vkj mUur'khy lenk; ;k lekt d fy, f'k{kk xg.k djuk iFke t:jr gA** अशिक्षा के कारण ही लोग शोषित हो हैं, जब तक लोग शिक्षित नहीं रहेंगे, तब तक उनका शोषण होता रहेगा। अतः अपने बच्चों को शिक्षित करना जरूरी है।

जनजातीय बच्चों के शैक्षणिक विकास के लिए इन्होंने ^'kfDr fudru fo'ofo|ky;* की स्थापना का सपना देखा था जिसमें जनजातीय बच्चों के साथ–साथ सामान्य वर्ग के बच्चे भी अध्ययन कर सके। इस विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले सिर्फ भारतीय कहलाए, परन्तु कार्तिक उराँव के असमय निधन होने के कारण उसका यह सपना आज भी अधूरा है।

कार्तिक उराँव ने अपने परिश्रम, मेधा एवं दृढ़ इच्छा–शक्ति से जीवन पर्यन्त देश की सेवा की एवं समाज के अन्तिम पंक्ति के व्यक्ति के उत्थान के लिए प्रयासरत रहे।

1-1 lkfgR; leh{kk

कार्तिक उराँव के आरंभिक जीवन की जानकारी उनके जीवनी लेखक रायनन्द साहू की पुस्तक *^^vkfnoklh ,oa lLd`frd d vxnwr%dkfrd mjko*** से प्राप्त होती है। इसमें बताया गया है कि कार्तिक उराँव ने आर्थिक विपन्नता को अपनी पढ़ाई पर हावी नहीं होने दिया। उच्चतर शिक्षा पाने के लिए विदेश जाने के निर्णय को उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सुमति उराँव के द्वारा पूरा समर्थन दिया गया।

शिवाजी गौतम की पुस्तक ^^dkfrd mjko n us'kuy yhMj vkQ >kj[k.M** एवं रायनन्द साहू के *^^vkfnoklh ,oa lLd`fr d vxnwr % dkfrd mjko*** में कार्तिक उराँव के जनजातियों के प्रति स्वाभाविक चिंता का वर्णन किया गया है। इसमें उन्होंने बताया है कि एच.ई.सी. में अपनी सेवा देने के दौरान जनजातीय समाज को मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयासरत रहे। उन्होंने जनजातीय युवाओं को शिक्षा को एक हथियार के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया जो उन्हें समाज के मुख्यधारा में लाने में सहायक होने के साथ ही उनके आर्थिक हितों की भी पूर्त्ति कर सकती थी।

कार्तिक उराँव के द्वारा लिखी पुस्तक ^^20 o"kZ dh dkyh jkr** से उनके जनजातीय समाज के पिछड़ेपन की चिन्ता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इस पुस्तक में उन्होंने आँकड़ों के आधार पर यह साबित किया है कि आजादी के 20 वर्ष बाद भी जनजातीय समाज आम जीवन शैली में शामिल नहीं हो पाया है। उनको प्रदान किये गए आरक्षण एवं योजनाओं के लाभ का समान रूप से वितरण नहीं हो पा रहा है बल्कि इसका अधिकतम लाभ धर्मान्तरित आदिवासी (धर्मान्तरित हुए हिन्दू–क्रिश्चयन) को मिलता रहा है।

रायनन्द साहू ने अपनी पुस्तक ^^vkfnoklh /keZ ,oa laLd`fr d vxnwr** में बताया है कि कार्तिक उराँव आदिवासी धर्म एवं संस्कृति को सुरक्षित एवं संरक्षित करने को लेकर दृढ़ संकलपित थे। इन्हें मजबूती देने हेतु उन्होंने ट्राइबल सबप्लान, भूदान आन्दोलन का विरोध एवं पड़हा के पुनर्गठन जैसे कदम उठाए।

विशप डॉ0 निर्मल मिंज ने अपनी पुस्तक *^dgkuh vkfnoklh jktuhfr dh** में बताया है कि कार्तिक उराँव ने राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने के बाद अन्य जनजातीय नेताओं के साथ मिलकर अलग झारखण्ड की माँग का पुरजोर समर्थन किया। इस माँग को ध्यान में रखकर तात्कालीन केन्द्र की सरकार ने

वर्ष 1972 में छोटानागपुर एवं संताल परगना स्वशासी विकास परिषद का गठन किया एवं कार्तिक उराँव को इसका उपाध्यक्ष बनाया। लेकिन वर्ष 1974 ई0 तक इस प्राधिकार में कोई काम नहीं होने पर उन्होंने नाराजगी जताई और कहा कि ^^Lok'kklh izkf/kdkj u rks Lok'kklh gS vkSj u blls dksbZ vf/kdkj izkIr gqvk**

बलबीर दत्त ने अपनी पुस्तक *^^dgkuh >kj[k.M vkUnksyu dh*** में इस बात का जिक्र किया है कि कार्तिक उराँव का लन्दन में भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से मुलाकत हुई। प्रधानमंत्री नेहरू ने कार्तिक उराँव की प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें स्वदेश लौटकर देश सेवा करने की प्रेरणा दी। नेहरू जी के बातों पर अमल करते हुए कार्तिक उराँव भारत आए और एच0ई0सी से जुड़कर कार्य करने लगे।

कार्तिक उराँव के राजनीतिक जीवन में अन्य जन प्रतिनिधियों से सौहाद्रपूर्ण एवं प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण दोनों तरह के संबंध रहे। बलबीर दत्त ने अपनी पुस्तक *^^dgkuh >kj[k.M vkUnksyu dh*** में कार्तिक उराँव एवं जयपाल सिंह के राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता का उल्लेख किया है। साथ ही उन्होंने कार्तिक उराँव एवं डेविड मूंज, लालू उराँव आदि के बीच राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता की संक्षेप में चर्चा की है।

1-2 'kks/k fjfDr

इन विद्वानों के अतिरिक्त कई अन्य विद्वानों ने कार्तिक उराँव के जीवन के विभिन्न पक्षों पर जानकारी प्रस्तुत की है परन्तु यह जानकारी संक्षिप्त एवं अव्यवस्थित (क्रमबद्ध नहीं) एवं अधूरी है। इस ऐतिहातिक शोधकार्य के माध्यम से कार्तिक उराँव के विचारों एवं दर्शन को समझने का प्रयास किया जाएगा।

1-3 'kks/k leL;k

इस शोध कार्य के माध्यम से कार्तिक उराँव के जीवन दर्शन, जनजातीय समाज के लिए किये गये प्रयास एवं वर्तमान झारखण्ड के विकास में उनके दिये गए योगदान को रेखांकित किया जायेगा। कार्तिक उराँव ने अपने सरकारी सेवा एवं सार्वजनिक जीवन के दौरान वर्तमान झारखण्ड के आधुनिकीकरण के लिए कौन–कौन से प्रयास किये, इसका ऐतिहासिक रूप से अन्वेषण किया जायेगा।

इस शोध विधि में कार्तिक उराँव के द्वारा ‘ट्राइबल सबप्लान’ को समर्थन देने के कारण को समझने का प्रयास किया जायेगा। इसके साथ ही उनके द्वारा जनजातियों के भूदान के विरोध करने के पीछे के कारण को जानने का प्रयास किया जायेगा। जब एक ओर पूरे देश में भूदान आन्दोलन का प्रचार–प्रसार और उसे प्रोत्साहित किया जा रहा था उसी समय तात्कालीन बिहार में खासकर छोटानागपुर और जनजातीय क्षेत्रों में भूदान आन्दोलन के विरोध के कारणों को ऐतिहासिक शोध विधि के माध्यम से समझने की कोशिश की जायेगी।

कार्तिक उराँव के द्वारा जनजातीयों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन के रूप में ^^iMgk i;pk;r** का पुनर्गठन किया गया। इस पुनर्गठन के पीछे उनके क्या उद्देश्य थे। इसके साथ ही उन्होंने किन उद्देश्यों को लेकर जनजातीय समाज के लिए ‘अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद’ नामक संगठन की स्थापना की। इन विषयों पर ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा सूक्ष्मता से अध्ययन किया जायेगा। कार्तिक उराँव ने अपने समय में जनजातीय समुदाय को आरक्षण का पूरा लाभ नही मिलने एवं इन लाभों के असमान वितरण होने पर अपनी चिन्ता जाहिर की। कार्तिक उराँव ने अपनी इस चिन्ता को आँकड़ों सहित अपनी पुस्तक ‘बीस वर्ष की काली रात’ में प्रस्तुत किया है। उन्होंने जनजातियों के धर्मान्तरण को लेकर

चिन्ता व्यक्त की एवं जनजातीय समाज के अधिकार की रक्षा के उद्देश्य से डिलिस्टिंग से संबंधित बिल को संसद के पटल पर रखा। इस शोध कार्य के द्वारा ऐसे कार्यो (कदम उठाने) के पीछे की परिस्थितियों को ऐतिहासिक शोध विधि के माध्यम से खोजने का प्रयास किया जायेगा।

कार्तिक उराँव ने अलग झारखण्ड राज्य की माँग को अन्य जनजातीय नेताओं के साथ मिलकर जोर–शोर से उठाया। इस संबध में कार्तिक उराँव के कार्य एवं रणनीतियों पर व्यापक फलक पर ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अध्ययन किया जायेगा।

1-4 vUos"k.k dk mís'; ,oa izj.kk

प्रत्येक शोध कार्य का कुछ निश्चित उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य के माध्यम से शोध कार्य को उचित एवं निश्चित दिशा प्रदान किया जाता है। इस प्रस्तावित शोध प्रबंध के उद्देश्य निम्नलिखित है :–

- कार्तिक उराँव के प्रारंभिक संघर्षपूर्ण जीवन की जानकारी उपलब्ध कराना।
- कार्तिक उराँव द्वारा आदिवासी धर्म एवं संस्कृति के लिए किये कार्य को रेखांकित करना।
- अलग झारखण्ड राज्य की माँग में कार्तिक उराँव की भूमिका को दर्शाना।
- जनजातीय समाज को प्राप्त संवैधानिक अधिकारों की रक्षा हेतु कार्तिक उराँव द्वारा किये गये प्रयास को उजागर करना।
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर कार्तिक उराँव के विचार को प्रकाश में लाना।

1-5 ifjdYiuk

- कार्तिक उराँव ने अपने मेहनत और लगन से गरीबी और विपन्नता से बाहर निकलकर समाज की मुख्य धारा से जुड़ने में सफल रहे।
- कार्तिक उराँव ने आदिवासी समाज और संस्कृति को विशिष्ट पहचान दिलाया।
- कार्तिक उराँव ने पृथक झारखण्ड राज्य का समर्थन किया।
- कार्तिक उराँव ने जनजातीय समाज की रक्षा हेतु 'आदिवासी 'सब–प्लान' एवं 'डिलिस्टिंग' का समर्थन एवं स्थानीय स्तर पर भू–दान आन्दोलन का विरोध किया।
- कार्तिक उरांव ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली एवं जनजातीय कौशल शिक्षा पर जोर दिया।

2- 'kks/k izk:i

2-1 'kks/k fof/k

प्रस्तावित शोध–कार्य ऐतिहासिक विधि से किया जायेगा। इसमें विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्रोतों और ऐतिहासिक ग्रंथों का अध्ययन कर तथ्यों का विश्लेषणात्मक वर्णन किया जायेगा। कार्तिक उराँव से संबंधित पुस्तकें, उनके द्वारा लिखित पुस्तक एवं अन्य विद्वानों द्वारा लिखी पुस्तकों का ऐतिहासिक संदर्भ में उनकी महत्ता को स्थापित करने का एक तारतम्य प्रयास किया जायेगा।

2-2 MkVk ladyu gsrq midj.k ,oa rduhd

डाटा संकलन हेतु राष्टीय पुस्तकालयों, राष्ट्रीय अभिलेखागार, संबंधित सरकारी कार्यालयों एवं उनकी वेबसाइट से शोध संबंधी सामाग्री एवं डाटा एकत्रित किये जायेंगे। इसके साथ ही समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं जर्नल्स का अध्ययन किया जायेगा। पारिवारिक सदस्यों, सहकर्मियों एवं उनके गांव के लोगों से साक्षात्कार लेकर जानकारी इकट्ठी की जाएगी।

2-3 MkVk dk fo'y"k.k

इस ऐतिहासिक शोध में सटीक एवं सार्थक वर्णन के निर्माण के लिए डेटा और तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। डेटा और तथ्यों के विश्लेषण के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के लेखकों की विश्वसनीयता, पूर्वाग्रह एवं संभावित सीमाओं पर विचार किया जायेगा।

समानताओं और विसंगतियों की पहचान करने के लिए कई स्रोतों से प्राप्त जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त डेटा की समानता इसकी विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता को बढ़ाती है।

डेटा की वस्तुनिष्ठ व्याख्या करने हेतु आलोचानात्मक सोच के कौशल का प्रयोग किया जाएगा। कार्तिक उराँव के लिए बनाए गए धारणाओं पर सवाल खड़े किये जायेंगे एव व्याख्याओं को चुनौती दी जायेगी। विभिन्न दृष्टिकोणों और डेटा के प्रकारों को जोड़कर सूक्ष्म समझ प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न तथ्यों एवं साक्ष्यों को रचनात्मक रूप से एकीकृत किया जायेगा।

3- 'kk/k dk;l dk egRo

गुमला के लीटाटोली से निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में ध्रुव तारे की तरह छा जाने वाले कार्तिक उराँव झारखण्ड के दूरदर्शी एवं मुर्धण्य विद्वान, समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ थे। यह बड़े दुःख का विषय है कि राष्ट्रीय इतिहासकारों के साथ ही क्षेत्रीय इतिहासकारों ने भी इनके व्यक्तित्व एवं जीवन–दर्शन पर बहुत अधिक शोध नहीं किया है। कार्तिक उराँव पर जितना लिखा जाना चाहिए था उस लेखनी का अभाव आज भी दृष्टिगोचर होता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में बतौर अभियंता के पद पर सेवा देने से लेकर समाज का पथ प्रदर्शन करने तक उनकी ऐतिहासिक जानकारी का अभाव दिखता है।

प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से कार्तिक उराँव के जीवन के अनछुए पहलूओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा जो अभी तक अन्य इतिहासकारों, शोधार्थियों, पत्रकारों एवं अन्य के द्वारा उजागर नहीं किया गया है।

4- orZeku le; esa 'kks/k dh mi;ksfxrk ,oa izklafxdrk

कार्तिक उराँव ने महसूस किया कि भारत में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं और ये परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में लगातार हो रहे हैं किन्तु जनजातियों के जीवन में तनिक भी परिवर्त्तन नहीं हुआ। उन्होंने जनजातीय समाज को एक बीज मंत्र दिया किया कि ''हर जनजाति इसे अच्छी तरह जान ले कि उनके कल्याण के लिये उन्हें स्वयं संघर्ष करना पड़ेगा।'' उनकी कही ये बातें आज भी पूरी तरह से प्रासांगिक लगती है।

कार्तिक उराँव ने जनजातीय आत्म सम्मान एवं गौरव की रक्षा पर जोर दिया एवं युवाओं को अपने धर्म एवं संस्कृति पर गर्व करना सिखाया। किसी भी समाज में अपने इतिहास धर्म एवं संस्कृति की पुर्नस्थापना गौरव का भाव हीन भावना, मानसिक गुलामी एवं दोयम दर्जे के नागरिक होने की सोच से बचाती है। ब्रिटिशों ने भारतीय वैभवशाली इतिहास धर्म एवं संस्कृति पर ही प्रहार करके भारतीयों को कई दशकों तक मानसिक रूप से हीन और छोटा बनाए रखा। कार्तिक उराँव इस बात के प्रति सचेत रहे और अपनी पुरातन धर्म एवं संस्कृति का गुनगान किया। ये विचार आज भी पूर्ण रूप से उपयोगी एवं प्रासंगिक बने हुये हैं।

कार्तिक उराँव ने जनजातीय समाज के कई मुद्दों को जोड़–शोर से उठाया। इसमें जनजातीयों को मिलने वाले आरक्षण का असमान वितरण, जनजातीय समुदाय के जमीन के हस्तान्तरण का विरोध, परहा पंचायत का गठन, सरहूल त्योहार का धूमधाम से आयोजन करके जनजातीय संस्कृति का प्रचार एवं डिलिस्टिंग जैसे विषय शामिल हैं। ये सारे के सारे विषय वर्त्तमान समय में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने कार्तिक उराँव जी के समय आज से लगभग पाँच दशक पहले थीं।

इस प्रस्तावित ऐतिहासिक शोध कार्य द्वारा झारखण्ड के जनजातीय समाज के लिए किये गये कार्तिक उराँव के प्रयासों एवं उनके विचारों से आम लोग परिचित हो पायेंगे जो पूर्व के विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा अछूते रहे हैं।

5- lelkef;d Kku esa ;ksxnku

राष्ट्रीय राजनीति एवं झारखण्ड के सामाजिक मुद्दों के प्रति कार्तिक उराँव के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितना पाँच–छः दशक पूर्व प्रासंगिक थे। झारखण्ड के वर्त्तमान समस्याओं का चित्रण एवं

दूरदर्शी विचार जो उन्होंने 60 और 70 के दशक में दिया था वह समसामयिक झारखण्ड की समाज और राजनीति का ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। उदाहरणास्वरूप झारखण्ड में आदिवासियों का धर्म परिवर्तन झारखण्ड के सामाजिक चरित्र पर आर्थिक पिछड़ेपन एवं इसके विभिन्न आयाम के प्रति कार्तिक उराँव जी की चिन्ता सर्वमान्य प्रतीत होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध से क्षेत्रीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण सर्वमान्य व्यक्तित्व की जानकारी के प्रति समाज की रूचि बढ़ेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य में कार्तिक उराँव के संबंध में सामाजिक ज्ञान की वृद्धि में यह शोध उपयोगी सिद्ध होगा।

6- Hkfo"; ds dk;Z

वर्त्तमान समय में कार्तिक उराँव के व्यक्तिगत जीवन, उनके विचारों एवं जनजातीय समाज के लिए किये गये उनके प्रयासों पर ज्यादा शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तावित शोध–प्रबंध कार्तिक उराँव के व्यक्तित्व एवं विचारों के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इसके साथ ही यह शोध कार्य क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर शोधार्थियों के लिए लाभदायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

इस शोध कार्य के माध्यम से झारखण्ड सरकार को भी कार्तिक उराँव के विचारों को जानने–समझने का मौका मिलेगा, साथ ही यह जनजातीय, समाज की समस्याओं को समझने में सहायक होगा। इस शोध कार्य में कार्तिक उराँव के जनजातीय समाज के लिए योजनाओं एवं विचारों पर प्रकाश डाला जायेगा जिससे प्रेरणा लेकर सरकार एवं प्रशासन जनजातीय विकास एवं योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित कर सकें। भविष्य में भी यह अनुसंधान विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विधार्थियों, शिक्षकों एवं सामान्य लोगों को कार्तिक उराँव के विचारों एवं उनके द्वारा जनजातीय समाज के लिए किये उनके योगदान से अवगत करायेगा। यह शोध झारखण्ड के लोगों तक अपने तात्कालीक नायक की ऐतिहासिक छवि को प्रस्तुत करेगा।

7- v/;;k;hdj.k %&

Hkwfedk

izFke v/;k; %& ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

f}rh; v/;k; %& कार्तिक उराँव और आदिवासी अस्मिता

r`rh; v/;k; %& कार्तिक उराँव का राजनीतिक दर्शन एवं राजनीति में प्रवेश

prqFkZ v/;k; %& जनजातीय धर्म–संस्कृति तथा धर्मान्तरण पर कार्तिक उरांव के विचार

iape v/;k; %& कार्तिक उराँव की प्रासंगिकता

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ

परिशिष्ट

lanHkZ lwph %&

1. बलबीर दत्त, कहानी झारखण्ड आन्दोलन की, क्राउन पब्लिकेशन, राँची, झारखण्ड, 2014
2. कार्तिक उराँव, 20 वर्ष की काली रात, पाइनियर प्रिंटर, नई दिल्ली, 1970
3. शिवाजी गौतम, कार्तिक उराँव–ए नेशनल लीडर ऑफ झारखण्ड, दिशा इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 2016
4. रायनन्द साहू, आदिवासी धर्म एवं संस्कृति के अग्रदूत, पृथ्वी प्रकाशन
5. डॉ० निर्मल मिंज, कहानी आदिवासी राजनीति की, क्राउन पब्लिकेशन, राँची, झारखण्ड, 2016
6. अमर कुमार सिंह, झारखण्ड कथा : स्वदेशी कलोनॉइजेशन, सोशल चेंज, 1994
7. के०एन० सहाय, डॉयनेमिक ऑफ ट्राइबल लीडरशिप इन बिहार, किताब महल, 1978

8. प्रकाश चन्द्र उराँव, बिहार के उराँव, आनन्द ज्ञान प्रकाशन, राँची, झारखण्ड, 1988

9. उमेश कुमार वर्मा, ट्राइबल लॉइफ ऑफ बिहार, किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 1991

10. सुशीला मिश्रा, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन छोटानागपुर, पटना, बिहार, 1990

11. एस०पी० सिन्हा, कन्फ्रिक्ट एडं टेन्शन इन ट्राईबल सोसाइटी, कॉन्सेप्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1993

12. द कन्सिट्यूशन ऑफ द अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद राँची, झारखण्ड, 1968

13. सुसाई तिग्गा, लाइफ एंड कन्ट्रीबुशन ऑफ जयपाल सिंह, पीएचडी, थेसिस, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, 1989

14. पी०सी०राय चौधरी, बिहार ड्रिस्टिक गजट, राँची, 1970

15. के०एन०सहाय, चेंज ऑफ ट्राईबल आइडेन्टिरी ऑफ छोटानागपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 1985

tuly] i=&if=dk] lekpkj&i= ,oa ljdkjh nLrkost %&

1. ‘ट्राईबल इंडिया’ ए मैगजीन ऑफ आदिवासी विकास परिषद, 19.05.1989.

2. जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, Vol. XXVI No-11 इनटाईटल्ड गिलिम्बस ऑफ ट्राईबल चीफ–कॉर्तिक उराँव, बाध उराँव पी०सी०–1983

3. बिरसा एग्रीकल्चरल युनिवर्सिटी, 1985–86 Vth अनुअल रिपोर्ट, राँची, झारखण्ड

4. ए ट्राईबल हू रोअर लाईक ए टाईगर इन पार्लियामेन्ट हाउस, द हिन्दू

5. झारखण्ड के आदिवासियों के मसीहा थे कार्तिक उराँव, प्रभात खबर, 20 अगस्त, 2020

6. मेन्बरर्स बॉयोप्रोफाइल, Loksabhaphnic.in, 20 अगस्त, 2020

7. परम्परागत आदिवासी समाज और डिलिस्टिंग विषयक राजनीति, कुँडुख टाइम्स

8. जीवन परिचय, बाबा कार्तिक उराँव, अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद, राँची, झारखण्ड

9. संसदीय राजनीतिक कोश झारखण्ड, शब्दार्थ प्रकाशन, 2011

10. महान जननायक थे कार्तिक उराँव, दैनिक भाष्कर, 31 अक्टूबर, 2014

11. लोकसभा की प्रोसिडिंग्स

(i) लोकसभा डिबेट्स ऑन रिऑर्गनाइजेशन ऑफ स्टेट Vol. XXVII, 15.04.1969

(ii) लोकसभा डिबेट्स, 29 अप्रैल, 1974